## संपादकीय

*यूँ तो मेरे साथ, संपादकीय लेखन में विषय चयन की दुष्कर दुविधा सदैव बनी रहती है। इधर सवा साल से संपूर्ण मानव जाति कोरोना महामारी से त्रस्त और पस्त है। अतएव समाचार पत्र, पत्रिका, टीवी सहित लेखन की सभी विधाओं में यह मायावी महामारी अपने संपूर्ण भयावहता और त्रासदी के साथ छाई हुई है। परंतु यहाँ मैं इस बार भी पूरी ईमानदारी से कहना चाहूँगा कि चर्चा हो या लेखन, यह नामुराद विषय निर्विवादित रूप से मेरे सबसे नापंसदीदा विषयों में अभी भी पहले नंबर पर बना हुआ है। दूसरी ओर, यह भी स्थापित सत्य है कि किसी भी काल का लेखन, समकालीन सामाजिक सरोकारों से पृथक नहीं हो सकता । सो कोरोना पर कलम चलाना वर्तमान का युगधर्म बन गया है, और इसलिए इससे कन्नी काटकर, अब और नहीं बचा जा सकता।*

*यूँ तो महामारियाँ हर युग में आती रही हैं और उन्होंने मानव जीवन के इतिहास पर अपनी कई अमिट छाप छोड़ी है। किंतु इस सदी की मानवजनित यह वैश्विक त्रासदी मनुष्य जीवन के हर हिस्से में जिस गहराई से पैबस्त हो गई है, इतिहास में ऐसा दूसरा उदाहरण मिलना मुश्किल है। इसकी हालिया पिछली दो सुनामी लहरों का हम सामना करने के दरमियान बहुत कुछ खो चुके हैं, लुटा चुके हैं, टूट चुके हैं। जबकि विशेषज्ञों द्वारा तीसरी अवश्यंभावी लहर की भी भविष्यवाणी की जा रही है, और कहा जा रहा कि अबकी बार महामारी का नया मायावी पूतना रूप बच्चों के लिए विशेष रूप से घातक साबित होने वाला है। देश में 6 वर्ष से कम आयु के लगभग 16 करोड़ बच्चे हैं। बच्चे किसी भी देश के भविष्य की बुनियाद होते हैं, वे हमारे सबसे मूल्यवान प्राकृतिक संसाधन हैं। बच्चों के बारे में एक बहुत ही सुंदर बात एंजेला स्विंड ने कही है,'' जब हम अपने बच्चों को जीवन के बारे में सब कुछ बताने की कोशिश कर रहे होते हैं, तब हमारे बच्चे हमें बता देते हैं कि, जीवन असल में है क्या.. ।''*

*कोरोना के दरमियान लगातार महीनों के लॉकडाउन में मानसिक, शारीरिक विभिन्न स्तरों पर सबसे ज्यादा देश का कोमल बालमन प्रभावित हुआ है, कमोबेश यही हाल पूरे विश्व का है। स्कूल, होमवर्क, टीचर, प्लेग्राउंड और दोस्तों की मस्ती भरी दुनिया से यूँ कटकर एक कमरे में कैद बचपन की दुश्वारियों का अंदाजा लगाने की भी किसी को फुर्सत नहीं है। बाल मन-मस्तिष्क पर इस महामारी की शून्यता दौरान तार-तार होती मानवता के दिल दहला देने वाली बेशुमार निष्ठुर खबरों की कैसी अमिट छाप अंकित होगी, यह सोच पाना कठिन है। इस वैश्विक आपदा में मानवता तथा नैतिक मूल्यों को खूँटी पर टाँग कर, आपदा को अवसर में बदलने में लगे अवसरवादी समाज को टुकुर-टुकुर, देख-सुन रही, हमारी यह भावी पीढ़ी, आगे चलकर कैसे समाज का निर्माण करेगी? हमारे सामने यह यक्ष प्रश्न है।*

# आदिवासी कलाकार वो रत्न हैं जिनको पहचान नहीं मिल पाई है

**शेखर सेन** (अध्यक्ष, संगीत नाट्य अकादमी, दिल्ली) से **राजाराम त्रिपाठी** (संपादक, ककसाड़) की बातचीत

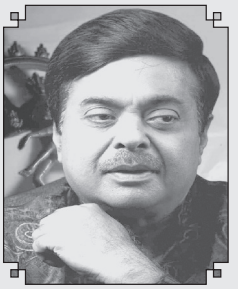

**शेखर सेन**
(अध्यक्ष)
**पता**–संगीत नाट्य अकादमी, रबीन्द्र भवन 35, फिरोजशाह रोड, मंडी हाउस (कनॉट प्लेस), न. दिल्ली-110001

**राजाराम त्रिपाठी**
(संपादक, ककसाड़)

पदमश्री से अलंकृत शेखर सेन का जन्म छत्तीसगढ़ के रायपुर में 1961 में एक बंगाली परिवार में हुआ। उनके पिता स्व.डॉ. अरुण कुमार सेन, जो इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़ में कुलपति थे और माँ स्व. डॉ. अनीता सेन, दोनों ग्वालियर घराने के प्रसिद्ध शास्त्रीय गायक और संगीतज्ञ थे। शेखर सेन ने अपने माता-पिता से संगीत सीखा और संगीतकार बनने के लिए 1979 में रायपुर से मुंबई चले गए। वहाँ 1984 में उन्होंने गायक के रूप में शुरुआत की। कुछ समय बीतने के बाद उन्होंने 'दुष्यंत ने कहा था' (दुष्यंत कुमार की ग़ज़लों पर), 'मध्ययुगीन काव्य 1985' से शोधपरक संगीत आधारित कार्यक्रम करने शुरू किए। मध्यकालीन कवियों जैसे रसखान, रहीम, ललितकिशोरी, भूषण, बिहारी, कबीर, तुलसीदास, सुर पाकिस्तान का हिंदी काव्य 1986( हिंदी गीत, पाकिस्तान में लिखे गए दोहे), 'मीरा से महादेवी तक 1987' (कविता द्वारा हिंदी गीत) और कई नवीन कार्यक्रम किए। सेन ने अपने कैरियर की शुरुआत 1979 में मुंबई में जब संगीतकार बनने के उद्देश्य से की तो उन्हें एचएमवी ने एक ग़ज़ल गायक के रूप में अनुबंधित किया। पर उन्होंने जल्दी ही जान लिया कि उनकी असली प्रतिभा भजनों की रचना में है अतः उन्होंने अपनी धारा बदल दी और उसमें ही काम किया और 1983 से गायक, गीतकार और संगीतकार के रूप में 200 से अधिक भजन एल्बम प्रस्तुत किए। इसके साथ ही उन्होंने कई टीवी धारावाहिकों और फिल्मों में गीत गाए और उन्हें स्वरबद्ध भी किया। इस तरह से उन्होंने 1200 से अधिक कार्यक्रम किए हैं। 1998 से, एक नाटककार, अभिनेता, गायक, निर्देशक और संगीतकार के रूप में, सेन ने मोनो एक्टिंग के संगीत नाटकों का निर्माण किया है और अपने एकल अभिनय से 'तुलसी','कबीर', 'विवेकानंद' से अधिक संगीत नाटकों के शो किए हैं। 'साहब' और'सूरदास' में किए गए उनके प्रदर्शन को भारत के साथ-साथ अमेरिका, इंग्लैंड, बेल्जियम, सूरीनाम, सिंगापुर, जकार्ता, हांगकांग, जोहान्सबर्ग, शरजाह, मारिशस और त्रिनिदाद में बहुत प्रशंसा मिली।

शेखर सेन का एक नाटक जो मोनो एक्ट 'सूरदास' था उसका प्रीमियर 14 जून 2013 को जब एनसीपीए मुंबई में हुआ तो उस अवसर पर सेन ने टाइमआउट मुंबई को बताया ,'शुरुआत में, मैं इस बात को लेकर बहुत आशंकित था कि क्या एक अंधे व्यक्ति को दो घंटे के लिए चित्रित किया जाय। यह निर्णय करना बहुत ही कठिन था। लेकिन जब मैंने (नाटक) लिखना शुरू किया तो मुझे अहसास हुआ कि दृष्टि वाले लोग केवल दुनिया को देख सकते हैं, जबकि बिना दृष्टि वाले दुनिया को बेहतर देख सकते हैं।'

अनेक पुरस्कारों से पुरस्कृत शेखर सेन को 2015 में पद्मश्री पुरस्कार से नवाजा गया और भारत सरकार द्वारा उन्हें संगीत नाट्य अकादमी , दिल्ली का अध्यक्ष नियुक्त किया गया।